मंजूल भगत के उपन्यासों में नारी पात्र

पल्लवी लहू गजधने
शोधछात्रा,
हिंदी विभाग
दयानंद कला वरिष्ठ महाविद्यालय, लातूर

डॉ. बालाजी श्रीपती भुरे
संशोधन मार्गदर्शक तथा हिंदी विभागाध्यक्ष
शिवजागृती वरिष्ठ महाविद्यालय, नलेगाँव
ता. चाकूर, जि. लातूर

साहित्य समाज का प्रतिबिंब है। समाज में घटित घटनाओं को अनुभवों को अपनी सुझबूज के साथ वर्णित करना ही साहित्यकार का काम होता है। अपने विचारों को स्पष्ट करने के लिए अनेक साहित्यकारों ने 'उपन्यास' विधा का अवलंब किया है।

उपन्यास वह है जिसमें मानव जीवन के किसी तत्व को, उक्ति के रूप में सम्मिलित निकट रखा जाए। यह शब्द 'उप' और 'न्यास' से मिलकर बना है। इसमें उप का अर्थ है समीप और न्यास का अर्थ है रचना।

किसी कथा में जीवन के छोटे भाग को या किसी एक प्रसंग को दर्शाया जाता है तो उपन्यास में लगभग पुरे जीवन के हर रंग, अनुभव, पात्र और अनेक कहानियों का समावेश होता है। इसी 'पूर्णता' के कारण यह विधा पाठकों में अधिक लोकप्रिय हो गई है।

हिन्दी साहित्य में उपन्यासों के मुख्य पात्र लगभग पुरूष ही रहे है , पर इस प्रथा को तोड़ने का काम अनेक महिला साहित्यकारों ने किया है, जिसमें मंजुल भगत का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसका विवेचन हम यहाँ पर करेंगे।

टुटा हुआ इंद्रधनुष्य :

यह मंजुल भगत का प्रथम उपन्यास है, जो 1976 में प्रकाशित हुआ। इसका प्रमुख पात्र 'शोभना' है। शोभना एक स्वाभिमानी और नये विचारोंवाली नारी है, जो अपने आप को किसी बंधन में बाँधना नहीं चाहती। यह प्रेम के त्रिकोण की कहानी है। शोभना मनिष से प्रेम करती है पर शादी नहीं करना चाहती क्योंकि पति और प्रेमी यह दोनों अलग-अलग किरदार है ऐसा वे मानती है और यह बात स्पष्टता के साथ मनिष से कहती है।

शोभना प्रभात से शादी कर लेती है और अपने अतित के प्रेमी के बारे में पति प्रभात को बताती है। प्रभात भी शोभना-मनिष के रिश्ते को खुले मन से समझकर उनके बच्चे का स्वीकार करता है। प्रभात समझदार इन्सान है वह शोभना को समझाते हुए कहता है कि, "शोभना भगवान के लिए अपने को इतना बिखरने मत दो कि फिर समेटना कठिन हो जाए। शोभना जीवन का कोई भी एक अंग इतना महत्वपूर्ण नहीं कि उसके न होने से संपूर्ण जीवन ही नष्ट हो जाए"[1] इस उपन्यास में 'अर्चना' जो मनिष की पत्नि है वह भी शोभना और मनिष की बेटी को गोद लेती है और एक महान नारी होने का परिचय देती है।

लेडीज क्लब :

यह उपन्यास उच्चवर्गिय महिलाओं के जीवन पर व्यंग करनेवाला उपन्यास है। इसमें श्रीमती इंडेविया, श्रीमती पुरी, श्रीमती कौल, श्रीमती जैन है। इन महिलाओं का एक क्लब है जहाँ वे यहाँ-वहाँ की बाते करती है, अपना पेहराव, वस्तुएँ एक दूसरे को दिखाती है और दूसरों की चुगली करती है बस यही इनका काम है।

यहाँ लेखिकाने बडे महानगरों में हो रही खोखली सभ्यता और उसके नुकसानों को दर्शाया है। वास्तव में रहकर ही जीवन का पूरा आनंद मिल सकता है। पाश्चात्य संस्कृति को अपनाकर जीवन का सही और पूर्ण आनंद पाना संभव नहीं है।

अनारो :

यह 1977 में प्रकाशित उपन्यास है। इसका मुख्य पात्र अनारो है। यह मंजुल भगत का सबसे प्रसिद्ध उपन्यास है। अनारो दूसरों के घरों में जाकर बरतन-पोछा करनेवाली औरत है। उसका पति उसे छोड़कर भाग गया है। इस कारण सारे परिवार की जिम्मेदारी उसी पर आ गयी। दिन-रात एक करके वह अपनी जिम्मेदारी निभाने का प्रयत्न करती है। अनारो अपनी बेटी का विवाह धूम-धाम से करती है- "अनारो को इस सगाई की चपत पड़ी पूरे दो हजार में। समधी तो खैर ऐसी दिलदार मेहमानदारी देखकर खील उठे। कैसा दमदार खाना परोसा गया था। पर अनारो का रोआँ-रोआँ कर्ज और एहसानों से बिध गया। अगले छह मास तक सवेरे की निकली अनारो रात दस बसे तक घर लौट पाती"।[2]

अनारो का पति छबीली नामक स्त्री ले आता है। शुरू में तो वह उसे अस्वीकार करती है पर छबीली को गर्भवती देख उसका स्वीकार भी करती है।

अनारो अपने बच्चों को विद्यालय भी भेजती है, डाकघर में खाता भी खुलवाती है। इस प्रकार वह आधुनिकता का स्वीकार करनेवाली नारी है। अनारो अत्यंत स्वाभिमानी है जब टिचर गंजी का विवाह संस्था में करने की बात करते है , तो अनारो पूछती है- "तुम करवा लोगी अपनी बेटी का ब्याह इस तरह? गंजी कोई अनाथ है, करनी लुली है चौबारे की इट नहीं, तो नाली का पत्थर भी नहीं अनारो की बेटी है बेटी।"[3]

अनारो अपने पति नंदलाल से केवल प्रेम और मान-सम्मान की अपेक्षा करती है। जब नंदलाल उसे अपने भाई बराबर मानता है यह सुनकर वह गर्वित हो जाती है और सोचने लगती है- "कर्जा तो यों चुटकियों में उतर जायेगा पर उसका मान उसकी कदर बनी रहे, उसके मरद की नजरों में।"[4]

खातुल :

यह 1983 में प्रकाशित उपन्यास है। इस उपन्यास की नायिका 'खातुल' है। यह अफगान प्रवासी परिवारों और विस्थापितों की कहानी है, जो अफगानिस्तान पर रूसी आक्रमण के बाद दिल्ली में आकर बसे है। खातुल के पिता अफगान में डॉक्टर है और माँ नर्स है। खातुल अमेरिका जाना चाहती है पर कोई सगा रिश्तेदार न होने के कारण उसे वीसा नहीं मिल रहा है। इस उपन्यास में खातुल के साथ-साथ 'कालु' नामक कुत्ते की कथा भी चलती है, जो बड़े लाड़-प्यार से पाला गया था पर अब उसे बेरहमी से घर से निकाल दिया है, कालु अब गली में विस्थापितों जैसे जिंदगी जी रहा है। वास्तविकता में खातुल अमेरिका नहीं अफगानिस्तान जाना चाहती है अपने माता-पिता के पास । ठिस उसी प्रकार कालु भी अपने मालिक के पास जाना चाहता है। यहाँ पर लेखिकाने खातुल की दुविधा मनोदशा को सटिकता के साथ दर्शाया है।

तिरछी बौछार :

यह 1958 में प्रकाशित उपन्यास है। इसकी नायिका 'विस्मिता' है, जो एक शिक्षित स्त्री है। वह अपने विचारों की पक्की है, पर न जाने क्यों एक परेशान सी रहती है। इससे निजात पाने के लिए वह शॉपिंग जाती है, "इस मन को लेकर भी एक आफत है। कहाँ लगाए विस्मिता इसे कहाँ ले जाए आखिर?"[5]

परिवार की जिम्मेदारी के साथ-साथ वह अलग कुछ करके दिखाना चाहती है पर उसे रास्ता नहीं मिल रहा है। यहाँ संपूर्ण भारतीय नारी की बेचैनी को दर्शाने का प्रयास लेखिका द्वारा हुआ है।

विस्मिता की बेटी 'नैना' पढ़ी-लिखी कामकाजी लड़की है। विस्मिता की तरह वह भी खुले विचारोंवाली है। विवाह के संबंध में नैना का यह सोचना कि, "मैं रेस के घोड़े की तरह किसी की जाँच पड़ताल के लिए नहीं बैठुंगी। मैं बेजान गुडियों की तरह सजकर नहीं बैठुंगी। मैं लड़के से जरूर बोलुंगी, मैं एक बार में हाँ नहीं कर सकती।"[6]

उसके खुले विचारों को ही व्यकत करता है ।

नैना अपने फैसले खुद लेती है, जब माँ अजिताभ को जमाई के रूप में पसंद करती है, तो नैना उसका अस्विकार करती है।

गंजी :

गंजी उर्फ शांति इस उपन्यास की प्रमुख पात्र है। गंजी अनारों की बेटी है, अपना घर चलाने के लिए वह सीलाई का काम करती है। गंजी स्वाभिमानी एवं महत्वाकांक्षी स्त्री है। गंजी अपना घर स्वयं चलाती है। वह पति से अधिक प्रेम करती है पर उसका पति किसी और स्त्री के वश में होने के कारण वह गंजी की उपेक्षा करता है। अपने मन का आक्रोश व्यक्त करते हुए उसका यह कहना कि, "तो फिर से उस चुडैल का भुत मेरे माथे चढके बोलने लगा? मैं मोल की हुई लौंडी हूँ ? जो यहाँ तेरी गृहस्थी सामू।"[7] यह उसके स्वाभिमान एवं महत्वाकांक्षाको व्यक्त करता हैं ।

शांति अपना नसीब खुद अपने मेहनत के बल पर सवारती है। उसने अपने बिजनेस के लिए सभी आवश्यक वस्तुएँ खरीद ली है। सिलाई मशीन और फटफटिया ये इसके उदाहरण है । शांति साहसी एवं धैर्यवान स्त्री है, भले ही उसके पति ने उसे छोड़ा है पर उसने न तो अपने संसार को तोड़ा है न ही अपने पति को छोड़ा है, हाँ पर अनारो की तरह वह अपने पति को ढूँढकर घर वापस लाने का प्रयास नहीं करती। यह मुख्य अंतर शांति और अनारो में है। पति ही उसकी कामयाबी को देखकर घर वापस लौटता है। यह आर्थिक स्वावलंबन का परिणाम है। आर्थिक स्वलंबन को लेकर रोहिणी अग्रवालने ठिक ही काहा है कि "आर्थिक स्वावलंबन किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व में आश्चर्यजनक परिवर्तन देनेवाला घटक है।"[9] उपन्यास के अंत में शांति माँ बनती है और अपने पति-बच्चे के कारण उसका परिवार पूरा हो जाता है और इस प्रकार अनारो और गंजी दोनों जीत जाती है। उपन्यास का अंत इन शब्दों में होता है- "नानी बन गई तू। वह फुसफुसाई। मारे खुशी के उसकी छाती से चुल्लू भर पानी उछला और आँखों में छलछलाया। पल्लू से आँखे दाब उसने आँखे सीख लिए। वापसी के किनारी बज़ार से देवी मइया की तीलक लिए जाऊँगी। जीत गई, अनारो तू तो जीत गई।"[10]

निष्कर्ष :

मंजूल भगत के नारी पात्रों की विशेषता यह है कि वे अधिक वास्तविक लगते है। 'टूटा हुआ इंद्रधनुष्य' की शोभना अपने आप को चली आ रही रुढी परंपरा में बांधना नहीं चाहती। इसीलिए अपने प्रेमसंबंध के बारे में अपने पति से स्पष्ट रुप से बताती है। 'लेडीज क्लब' के स्त्री पात्रों के माध्यम से पाश्चात्य संस्कृति को बताया गया है। 'अनारो' स्वाभिमानी है, वह स्नेह और सम्मान की चाह रखती है। अपने परिवार को चलाने का साहस, इच्छा उसमें है उसी के साथ वह आधुनिकता भी स्वीकार करती दिखाई देती है। 'खातुल' की द्वंव्दात्मक मनोदशा का मार्मिक चित्रण यहाँ हुआ है। 'तिरछी बौछार' उपन्यास की विस्मिता एक जिम्मेदार, कामकाजी, नये और स्वातंत्र्य विचारधारा की स्त्री है। विस्मिता की बेटी नैना भी पढ़ी-लिखी आधुनिक विचारोंवाली लड़की है। 'गंजी' महत्वाकांक्षी है इसमें आधुनिक विचार झलकते है। कुछ कर दिखाने की क्षमता उसमें है स्वयं के बल पर वह अपनी विपरीत परिस्थितियों पर विजय पाती है।

मंजुल भगत के उपन्यास से कुछ निष्कर्ष बिंदु हमारे सामने आते है। जैसे-

- स्त्री शिक्षा अत्यंत आवश्यक है।
- स्त्री का आर्थिक स्वावलंबी होना आवश्यक है।
- पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण घातक है।
- आधुनिक विचारों का स्वीकार कर अपनी प्रगति स्वयं करनी होगी।
- कठिनाईयों का सामना दृढ़ता से करना चाहिए।
- नारी की भावनाओं की कदर समाज में होनी चाहिए उसके विचारों को समझना चाहिए।

इस प्रकार मंजुल भगत के उपन्यास के पात्र स्वतंत्र विचारधारा, प्रतिभाशाली और प्रभावी है । इनके लगभग सभी नारी पात्र शिक्षित है और शिक्षा का प्रभाव उनकी विचारधारा पर दिखाई देता है। मंजुल भगत के नारी पात्र अपने विचारों की छाप पाठकों पर छोड़ते है ।

संदर्भ सूची :

1) संपा. कमलकिशोर गोयनका - मंजुल भगत समग्र कथा साहित्य भाग-1 पृ.34
2) संपा. कमलकिशोर गोयनका - मंजुल भगत समग्र कथा साहित्य भाग-1 पृ.90
3) संपा. कमलकिशोर गोयनका - मंजुल भगत समग्र कथा साहित्य भाग-1 पृ.84
4) संपा. कमलकिशोर गोयनका - मंजुल भगत समग्र कथा साहित्य भाग-1 पृ.103
5) संपा. कमलकिशोर गोयनका - मंजुल भगत समग्र कथा साहित्य भाग-1 पृ.172
6) संपा. कमलकिशोर गोयनका - मंजुल भगत समग्र कथा साहित्य भाग-1 पृ.197
7) संपा. कमलकिशोर गोयनका - मंजुल भगत समग्र कथा साहित्य भाग-1 पृ.269
8) रोहिणी अग्रवाल-गंजी उपन्यास की समिक्षा पृ.14
9) रोहिणी अग्रवाल-गंजी उपन्यास की समिक्षा पृ.303

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com